वल्लभाख्यान

(श्रीगोपालदासजी कृत)

गोस्वामी श्याम मनोहर

वल्लभाख्यान पहलो

(प्रमेयप्रकरण–सर्गलीला)

।। राग केदारो ।।

(तत्त्वध्यान और हृत्प्रसाद)

वंदू श्रीविट्ठलवर सुंदर नवघनश्याम तमाल ।।
जगतीतल उद्धार करेवा प्रगट्या परम दयाल ।।१।।
श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्रक्रीड़ा लीला द्विज तनुधारी ।।
सात दिवस गिरिवर कर धार्यो वासववृष्टि निवारी ।।२।
ते प्रगट्यानुं कारण कहिये जो सुरता मन आणो ।।
करो कृपा हुं करूं विनंती पोतानो करि जाणो ।।३।।

(उत्पत्तिपक्षके अनुरोधसु सर्गलीलाके उपादानको कूटस्थ–तत्त्व)

व्यापकरूप अद्वैत ब्रह्म जे 'तेजोमय' कहेवाय ।।
आर्यपंथ अधिकारी मुनिजन ते मांहे लय थाय ।।४।।
अक्षर आदि अखंड अनुपम उपमा कही नव जाय ।।
अस्ति अस्ति सउको मळि बोले ।।
निगम नेति–नेति गाय ।।५।।
निर्गुणनो निर्देश अटपटो रसना शी पेरे कहिये ।।
रूपवर्णवपु दृष्ट पदारथ त्यां एको नव लहिये ।।६।।

(उपपत्तिपक्षके अनुरोधसु नित्यलीलाविहारको कर्तृतत्त्व)

तेहथकी पुरुषोत्तम अळगा लीला अचल विहार ।।
ब्रह्मज्ञानी ने मुक्तिमारगी स्वप्ने नहीं व्यवहार ।।७।।
ज्यां वृंदावन आदि अचल शशी शरद रेन बहुवेश ।।
वनदेवी पद कुमकुम मुखसुख परसे रंग विशेष ।।८।।

ज्यां सरिता चामीकर–मणिगण उभय–बद्ध सोपान ।।
कमल कुमुद नाना अलि सुंदर मधुर करे त्यां गान ।।९।।
कनकलता मालती मल्लिका विविध कुसुम मकरंद ।।
शीतल पवन झकोरे लहरी परसे अति आनन्द ।।१०।।
पद्मराग मरकत मणि स्फटिक श्रीगोवर्धन सोहे ।।
ब्रह्मा रुद्र त्यां कोण बापडा श्रीहरिनुं मन मोहे ।।११।।
नाना पक्षीनी शब्दमाधुरी शोभा तणों नहीं पार ।।
विविध प्रकारे जूजवा कहेतां ग्रन्थ थाय विस्तार ।।१२।।
श्यामा शतदल नयन सुन्दरी यूथ तणों नहीं पार ।।
विविध रासमंडल रचना रची खेले श्रीनंदकुमार ।।१३।।
एणी पेरे नित नवली लीला घोष वाद्य झंकार ।।
अंग स्वेद मकरंदे मोह्या मधुप करे गुंजार ।।१४।।

(अभिन्ननिमित्तोपादानभूतताको निरूपण)

ए प्रभुने मन इच्छा उपनी यश थावा विस्तार ।।
अधिकारी पाखें ए वाणी नहीं कोने उच्चार ।।१५।।
भ्रूभंगेथी सृष्टि नीपनी अति सुंदर ब्रह्माण्ड ।।
चौद लोक नानावैचित्र्ये भूमंडल नवखण्ड ।।१६।।

(माहात्म्यबोधनिरपेक्षक्रिया और भगवद्रतिसापेक्ष भक्तिकी सृष्टि)

पर पोतानी व्यक्ति करेवा सृष्टि ते द्विधा प्रकार ।।
दैवी–आसुरी बे उपजावी प्रभु मन करी विचार ।।१७।।
भक्ति सुंदरी ने माया दासी बे मूरत प्रगटावी ।।
तेमां पहेली नखसिख सुभगा श्रीहरिने मन भावी ।।१८।।

कृपाकटाक्षे हुवा अक्षरमां उपन्या सत्त्व अनन्त ।।
भक्तिलीन हुवा सौभागी ते वैष्णव गुणवंत ।।१९।।
बीजी कटाक्षे जे जन उपन्या मायामां थया लीन ।।
कर्मजड आसुर अन्यउपासक भजनधर्मथी हीन ।।२०।।

(स्वसृष्टद्विविधजीवकी मिथ:मिश्रणनिरसनके लिये आचार्यकी अपेक्षा)

एणी प्रकारे सृष्टि द्विधा गुणमिश्रित चाली जाय ।।
भक्तिमारगी जीव स्वतन्त्र केवळ भक्त न थाय ।।२१।।
श्रीपुरुषोत्तमे वळि विचार्युं हवे प्रकार शो करिये ।।
म्हारी सेवा अने कथारस निरूपवा तनु धरिये ।।२२।।

(नित्यलीलास्थ पुरुषोत्तमको आचार्यरूपसु भूतलगोकुलागमन)

भक्तजीवनां भाग्य विस्तर्या इच्छा करी हरि सार ।।
तणे हेते आपोपें प्रगट्या श्रीवल्लभराज कुमार ।।२३।।
पूर्णब्रह्म श्रीलक्ष्मण–सुत पुरुषोत्तम श्रीविट्ठलनाथ ।।
श्रीगोकुलमां प्रगट पधार्या स्वजन कीधा सनाथ ।।२४।।

वल्लभाख्यान दूसरो

(प्रमेयप्रकरण–विसर्गलीला)

(राग रामकली)

(यज्ञसु यज्ञयजनयाजनपर ब्रह्मरूपसु विसर्गपुरुषविराटके प्राकट्यके वर्णनको उपक्रम)

श्रीलक्ष्मणसुत श्रीवल्लभरायजी,
स्मरण करतां दुष्कृत जाय जी ।।
कलिजन तरेवा नहीं अवर उपाय जी।।
यज्ञपुरुष हरिनां श्रुति गुण गाय जी ।।१।।
गाय श्रुति गुण रूप अहर्निश, धरि ध्यान विचार ।।
आनंदरूप अनुपम सुंदर, पामें नहीं कोई पार ।।२।।

(विसर्गपुरुषके प्राकट्यसु वाके प्रयोजनकी पूर्ति)

प्राणपति–प्राकट्य–कारण, कांईक कहूं मतिमंद ।।
हर सुर विधाता नव लहे साक्षाद् ब्रह्मानन्द ।।३।।
श्रीवृन्दावन–चंद–मुख–रुचि अग्नि ते अवतार ।।
द्विजतिलक–त्रिभुवन नाम निरूपम रूप अंगीकार ।।४।।

(पुष्टिसम्प्रदायमें विसृष्टपुरुषकी प्रमाणरूपता)

देवलोक दुंदुभि वाजिया आनंद करे रे निशंक ।।
असुरतिमिर उछेदवा भुवि वल्लभदेव मयंक ।।५।।
पूरण पुरुष प्रमाणपंथा व्याख्याता वेदान्त ।।
ग्रंथ सर्वे रसरूप कीधां पोताने सिद्धान्त ।।६।।

रसिक रसना रसिक वाणी, जाणी नर नवखंड ।।
ऊर्ध्वपंथा सुजस पसर्यो, वाधियो ब्रह्माण्ड ।।७।।

एक ब्रह्माण्डे जेना यश न माया, तेना हुवा कोटि अनंत ।।
तोय त्यां थकी वाधियो, जई वस्यो मुख धीमंत ।।८।।

अतुल अमल उद्योत उद्‌यो, भूतल–द्विजमार्तण्ड ।।
भक्ति–मारग–केसरी, गज–मायिक–मत शतखंड ।।९।।

दिग्विजय दश दिशायें कीधो, परिक्रमाने ब्याज ।।
तीर्थ सकल सनाथ कीधां, चरण–रेणु–समाज ।।१०।।

पत्रावलम्बे पंडित जीत्या, मायिक–मत्त–मातंग ।।
श्रीकृष्ण पूरण ब्रह्म स्थाप्या,जेनां रूप कोटि अनंग ।।११।।

(पुष्टिसम्प्रदायमें विसृष्टपुरुषकी साधनरूपता)

स्वमारग स्थिर स्थापवा आपवा भजनानंद ।।
नाम आप्यां जीवनें शुभ, मिष्ट मुखमकरंद ।।१२।।

अनेक जीवने कृपा करवा, देशांतर–प्रवेश ।।
कोमलपद ज्यां कमल विलसे, धन्य कहुं ते देश ।।१३।।

अंग बंग कलिंग कैकट मगध मरु सुर सिंध ।।
ते तामसनां अघ हर्यां परताप पदरज–गंध ।।१४।।

(पुष्टिसम्प्रदायआचार्यकी सम्प्रदायप्रवर्तनमें लौकिकप्रयोजननिरपेक्षता)

कनकस्नान शतमण सुवर्णे कराव्युं महिपाल ।।
ते मुकीनें वेगे चालियां राय दृष्टि न पाछी वाळ ।।१५।।

(मर्यादापुष्टिनामरूपवाले पुष्टिस्थापनकर्मपरायण ऐसेआचार्यवपु धारण करवेके लिये पुरुषोत्तमको वल्लभगृहमें प्रादुर्भावके मनोरथको वर्णन)

त्यांथी दक्षिण पाउं धारिया पांडुरंग श्रीविट्ठलनाथ ।।
नेत्र मळतां बात कीधी, वचन दीधुं हाथ ।।१६।।
वचन निश्चे श्रीनाथे मांग्यु कीधी श्रीवल्लभजी शुं वात ।।
अमने तो इच्छा एह छे, जे हुं नंदन तमें तात ।।१७।।

(पुष्टिसम्प्रदायकी मर्यादाके मंडनके लिये प्रमाण और प्रमेय रूपी पुरुषोत्तमकी निजहृद्गतस्थायिभावसु विभावनाको निरूपण)

ते पुरुषोत्तम प्रगटशे श्रीविट्ठल रूपनिधान ।।
नेत्रकमलें नाना भावें देशे भक्तने सन्मान ।।१८।।

(पुत्रभावसु श्रीविट्ठलनाथश्रीनाथके प्राकट्यके आश्वासनसु प्रमुदितको व्रजयात्रामहोत्सवको वृत्त)

त्यांथी श्रीवृन्दावन पांउ धारिया ज्यां मधुप करे झंकार ।।
कुसुमद्रुम–नवमल्लिका–मकरंदनो नहिं पार ।।१९।।
तरु तमाल अति शोभतां हेमजूथिका संघोड ।।
ललना तें सुभगा लटकतां हींडे ते मोडा–मोड ।।२०।।
तानधुनि मुनि मयूररूपे सांभळे धरि ध्यान ।।
नित्य–लीला–गान–श्रवणे करे ते मधुपान ।।२१।।
कुंजसदन सोहामणुं शोभा तणों नहि पार ।।
विविध रासमण्डल रचना रचि खेले श्रीनन्दकुमार ।।२२।।
रंगे ते रमतां दीठडां बलदेव श्रीगोविन्द ।।
ते पुत्रभावे प्रगटशे मन उपन्यो आनन्द ।।२३।।

बलदेव श्रीगोपीनाथ कहियें श्रीविट्ठल नन्दानन्द ।।
ते वेदपथ विस्तारशे जन आपशे आनन्द ।।२४।।

(यात्रोत्सवमें श्रीभागवतकथाके उत्सवको वृत्तांत)

त्यांथी केशीघाट पांउ धारिया कहि कथा तत्त्वसमाधि ।।
रसपुंज पुरुषोत्तम प्रमाण्या सरस्वती तजि आधि ।।२५।।
गिरिराजने आश्वास दीधो धरी कोमलचरण ।।
हरखें ते सामा आविया श्रीगोवर्धन-उद्धरण ।।२६।।
हळी-मळीने चालियां चरणाट ज्यां निजधाम ।।
नवरंग नागर प्रगटियां मन पूरवा बहुकाम ।।२७।।

(पुष्टिसम्प्रदायविसृष्टकी फलरूपता)

तत्त्व संख्याए कह्यां पद सार मांहे सार ।।
हवे कांई एक स्तुति करूं श्रीवल्लभराजकुमार ।।।२८।।

वल्लभाख्यान तीसरो

(प्रमेयप्रकरण–स्थानलीला)

राग – धन्याश्री

(प्रभुश्रीविट्ठलके जन्मोत्सवमें स्वरूप और काल की विरुद्धधर्माश्रताको वर्णन)

आ पोष–मध्याह्ने नोमे श्रीनाथजी ।।
अक्काजी उर उपन्यो आनन्द ।।
आ चंद श्रीवृन्दावन तणो प्रगटियो ।।१।।
आ सौभाग्यसुंदरी मळी धवल गाए ।।
सुहाय रूडा कंठना नाद । ।
आ आल्हाद ऊपनो ते अंगो–अंग घणो ।।२।।

(देशादि पंचककी दिव्यताको निरूपण)

(देश) आ सूतिकासदन सोहामणां ।।
शोभा रूडी लहेरडे जाय ।।
आ वाजिंत्र वाजे ते समे तणां ।।३।।
(द्रव्य) आ सर्वस्वदान तेणे समें ।।
करे रे श्रीवल्लभजी उदार ।।
आ सुकुमार सुत उदयो श्रवणें सुणीं ।।४।।
(कर्ता) आ पाताळे शेषनाग रीझिया ।।
ऊपर इन्द्रादिक देव ।।
आ ततखेव सुणि निसाण बजडावीयां ।।५।।
आ सिद्ध गन्धर्व गण/गुणी अपसरा ।।

उलटियां नृत्यने नाद ।।
आ आल्हाद भर्या श्रीवल्लभजी ये मानियां ।।६।।
आ ब्रह्मा महादेव मुनि हरखिया ।।
बरखिया कुसुमसमूह ।।
आ मोह टाळयो जगतनां जीवनो ।।७।।
(मन्त्र)आ निगम साम शाखा सहस्रशु ।।
करे रे भला निर्घोष ।।
आ घोषपति भगवन्त भेटतां ।।८।।
(कर्म)आ वेदविहित कृत्य सर्वे कीधां ।।
दीधां बहु पेरें गौदान ।।
आ मानशुं स्वजन संतोषियां ।।९।।

(कीर्तिद्योतक विविधसुगन्धके वर्णनसु श्रीगुसांईजीको पञ्चविध पुरुषार्थसाधक माहात्म्य)

(१)आ कनककचोळां कुमकुमभर्यां ।।
अक्षत दूर्वा भर्या रे सुथाळ।।
आ माळ पारिजातनी महमहे ।।१०।।
(२)आ तोरण परण सहकारनां ।।
धरणीये चंदनतणां नीर ।।
आ वीर श्रीगोपीनाथ श्रीविट्ठल प्रगटियां ।।११।।
(३)आ दधि दूध घृत मधु मांडवे ।।
शेरडिये वहे रे सुगंध ।।
आ सुगंध मोह्या अलिकुल आवियां ।।१२।।

(४)आ सूत मागध साधु सर्वे मळ्या ।।
मळिया ते मांहोमांह ।।
आ उत्साह भर्यो को कोने जाणे नहीं ।।१३।।
(५)आ शुकदेव सबल आनंदिया ।।
वंदिया श्रीवल्लभजीनां चरण ।।
आ गिरिधरण श्रीभागवत म्हारूं निरखशे ।।१४।।

(श्रीगुसांईजीकी स्तुति और आशिष)

आ सकल कला कलिकालमां ।।
कल्पद्रुम प्रगटियो आज ।।
आ काज मनवांछित पूरवां ।।१५।।
आ तैलंगतिलक त्रिभुवनधणी ।।
मणि मरकत धनवान ।।
आ समान रूप निरखतां कोये नहीं ।।१६।।
आ गणक गर्गादिक आवियां ।।
भावियां दिये रे आशीष ।।
आ जगदीश श्रीवल्लभघेरे प्रगटियां ।।१७।।

(परोक्षापरोक्ष अवतारके गुणसंकीर्तनमें परमानन्दकी ही फलश्रुति)

आ धवलधन्याश्री गान जे करे ।।
उच्चरे श्रीविट्ठलजी–अवतार ।।
आ सारस्वतलीला ते जन लहे ।।१८।।
आ दासनो दास जाय वारणे ।।
रह्यो रे उत्सव जुवे ।।
आ को'एक भाग्यवंत भगवदीय ते समे ।।१९।।

वल्लभाख्यान चौथो

(प्रमाणप्रकरण–पोषणलीला)

(राग – भूपकल्याण)

(प्रमाणप्रकरणमें पोषणरीतिको निरूपण)

ते पद वंदु श्रीवल्लभनंदजी ।।
त्रिभुवन मंगल परमानंदजी ।।
सकल जीवनो टाळयो द्वंद्वजी ।।
जगमां व्याप्यो मुख मकरंदजी ।।१।।

सुखद वंदु श्रीवल्लभ सुतनां पदांबुज सुकुमार ।।
निगमरहस्य विचार कीधो, सकलजन निस्तार ।।२।।

ब्रह्मकुल हरि अवतर्या ते टाळवा भूमि भार ।।
नाथ विट्ठल नाम निरूपम, वृन्दावन–शृंगार ।।३।।

एक रसना केम कहुं गुण, प्रगट विविध प्रकार ।।
नित्यलीला नित्यनौतन, श्रुति न पामे पार ।।४।।

सकलशास्त्र प्रमाण बोले सारमांहे सार ।।
तत्त्वमांहे तत्त्व त्रिभुवन, भक्तनो आधार ।।५।।

सर्वे अंगो–अंग रसभर्यां, रसभर्यां लोचन चार ।।
चलण–वलणे बोधव्या हृदे, भाव अनेक प्रकार ।।६।।

मुखसुगंधे मोह्या अलिसकल ते, आवी करे रे गुंजार ।।
सरसवचन उच्चारमात्रे, संशयनो परिहार ।।७।।

नाम–व्याजे प्रगट कीधो, मुक्ति–शत्रु–कार ।।
भुजदण्डपरसें भय हर्यां, एवा नाथ अमित उदार ।।८।।

(पुष्टिजीवन्‌को श्रीगुसांईजीके द्वारा स्वस्वरूपप्रबोधन और नियोग सु प्रभुसेवार्थयोजन)

स्वस्वरूप अर्थे प्रयोजिया, कृत हुता जे संसार ।।
राज–काजे जोडिया जन, उच्चावच नरनार ।।९।।

आगळ अंशे प्रगटिया ते, ग्रंथ कह्या बहुवार ।।
श्रीयशोदोत्संग–लालित, पूरण अतिसुकुमार ।।१०।।

अनेक धर्म कह्यां प्रभुजीये, निगमने अनुसार ।।
गिरिराजधरणनो ताप टाळ्यो, श्रीलक्ष्मणसुत निरधार ।।११।।

पोते ते प्रगट पोतातणो, रसतणो कर्यो रे उच्चार ।।
पोते अंगो–अंग सुखद शोभा, सदन–अंगीकार ।।१२।।

(उपसंहारमें पदसंख्यान्‌के अभिप्रायको निरूपण)

स्कंधसंख्या ए कह्यां पद, श्रीभागवत रसराज ।।
भक्तजन पदरज–प्रतापे सकल सरियां काज ।।१३।।

वल्लभाख्यान पांचवों

(प्रमाणप्रकरण–ऊति लीला)

(राग सामेरी)

(मंगलाचरण)

श्रीविट्ठल सुखकारी ।।
नामे निष्पाप थाय नरनारी ।।
दुर्गति सकल निवारी ।।
प्रगट्या श्रीब्रजपति रासबिहारी ।।१।।

(असद्वासनाके वारण और सद्वासनाके पोषणको प्रकार)

मायिक–मत जेणे खण्ड्यो ।।
भक्तिमारग जेणे बहुपेरे मंड्यो ।।
उत्पथजन सर्वे दण्ड्यो ।।
मूरख हेतु कुशब्द वितंड्यो ।।२।।

वदन–सुधाकर–जोते ।।
वचन सरस रसरास उद्योते।।
नव–जलघन–वपु पोते ।।
भक्ति सरस कीधां प्रभु हो ते ।।३।।

भक्तिपक्ष दृढ़ कीधो ।।
वचनसुधारस जन श्रुति पीधो ।।
अर्थ सकल तेनो सीधो ।।
ते लीलामाहें ताणीने लीधो ।।४।।

।। ढाळ ।।

(श्रीविट्ठलनाथजीको श्रुत्यादिके परम तात्पर्यरूप आविष्कारको पंचविधपुरुषार्थसाधनपनो)

जे लीलामां अंगीकार करियो रे, तेनो सकल ताप निस्तरियो रे।।
जेने विट्ठलनाथ विचारे रे, तेनें प्रकट पदारथ चारे रे।।५।।
उपरांत भजनफल आपे रे, व्रजमण्डल स्थिर करी स्थापे रे ।।
तेने देवमुनि सर्वे गाये रे, ते तो सर्व उपरान्त सुहाये रे ।।६।।

(श्रीवल्लभविट्ठलप्रवर्तितसम्प्रदायकी भगवदात्मरतिरूप नित्यलीलाप्रवेश संपादकतासु कालादिसर्वातीतता)

तेने काल–कर्म नव बांधे रे, यम ते शिर धनुष न साधे रे।।
एवो मारग श्रीवल्लभवरनो रे ज्यां नहीं प्रवेश विधि–हरनो रे।।७।।
ज्यां नित्यरास बहुपेरे रे, मध्य नायक निरतत घेरे रे।।
ज्यां रत्नजटित तट सरिता रे, नवपल्लव भूमि हरिता रे ।।८।।
ज्यां रत्नधातु गिरिराजे रे, वाजिंत्र विविध पेरे वाजे रे।।
ज्यां युवती–यूथ बहुमाये रे, श्रीजी श्यामलवर्ण सुहाये रे।।९।।

(प्रभुचरणमें भगवदनुभावप्रदर्शनप्रार्थना)

एणी पेरे श्रीगुसांईजीने जाणो रे, जाणी अहर्निश गाई बखाणो रे ।।
ते जीव जाति होय कोय रे, तेने तत्क्षण सर्वे सुख होय रे।।१०।।
सेवक जन दास तमारो रे, तेने रूपवियोग निवारो रे।।११।।

वल्लभाख्यान छट्ठो

(प्रमाणलीला–मन्वन्तरलीला)

(राग परज)

(पुष्टिसम्प्रदायमें व्रजाधिपके भजनरूप धर्मके अधिकरणभूत व्रजमंडल स्थापनके लिये गुरुकु प्रार्थना)

सगुण सनेही सामळा वाला अहर्निश दरशन् आपोजी।
परम सुख देवाने काजे व्रजमण्डल स्थिर करि स्थापो जी।।१।।

(भगवद् लीला और कथा की हृदयमें स्थिरस्थापनाके लिये सर्वात्मना गुरुको आश्रय)

श्रीवल्लभकुंवर कोडामणा तमारूं नाम निरन्तर लीजे जी।।
रूप–सुधारस–माधुरी ते लोचन भरि–भरि पीजे जी।।२।।

(वात्सल्यसंयोगरसकी भावना)

ते पद क्यारे देखिशुं जे गोधन पूंठे धाये जी।।
ब्रजसुन्दरी–मुख–सुख पामीने वारंवार अघाये जी।।३।।

(गोपीन्को स्वबाह्यशृंगाररसात्मक विप्रयोगमें और गोपन्को सख्य–रसात्मकबाह्यसंयोगकी आंतरभावना)

दिवसे सहु श्यामा मळी, रसरूप तणो यश गाय जी।।
गोपमंडळी मध्य देखीने वारंवार सुख थाये जी।।४।।
वासरनिर्वाह एम करे...

(गोकुलस्थ गोपन् और गोपीन् के सख्यशृंगारसंयोगकी लीलाभावना)

...सखी सायंकाळे पेखे जी।।
अलक मुख खुररज लागी ते, कमल भ्रमर विशेखे जी।।५।।

गोपबालक मंडली मध्ये रंग अनेक उपजावे जी।।
मत्त–गजगति–मलपतां ते श्रीगोकुलमां आवे जी।।६।।
लोचनभृंग पीये घणुं ते प्रकट मुखमकरंद जी।।
कमलपत्र शी आंखड़ी ते जोई–जोई टाळ्यो द्वन्द्व जी।।७।।
जोतां तृप्ति न उपजे प्रभु अधर सुधारस पाये जी।।
भुजलता भीडी भामिनी त्यारे दिवस ताप बुझाये जी।।८।।

(वात्सल्यभावमें माता यशोदाकु जो स्वसुतके दर्शनलालनसंयोगसुख भयो वाकी भावना)

पूरणसुख दई गोष्ठ मां, प्रभु आघेरा पाऊं धारे।
जसोदोजी ले भामणां सुतनें राई–लूण उतारे जी।।९।।
वस्त्रांचल मुख रज पोंछीने रूप सकल निहारे जी।।
उभी थाय रोमावली कर कोमळ अंग संभारे जी।।१०।।
करी पेरे पेरे वारणा सुतने सदनमां पधरावे जी।।

(अपने घरमें क्रियारूपभक्तिको भजन और प्रमाणरूपभक्ति यदि अशक्य होय तो वाकी परिचर्या भी परम्परासु शक्य हो, वैसी भावनाको निरूपण)

सुन्दरी गृहकारज मिषे वळी निरखवाने आवे जी।।११।।
उष्णोदक सोंधो मेळीने अली अंग अगाळ करावे जी।।
अंगवस्त्र करी स्वच्छ वपुने पाछे तेल लगावे जी।।१२।।
अनेक सुगन्ध वसन ने भूषन, फूल अंबोडे फावे जी।।

(वाकी सन्तुष्टि आत्मरति होवे फिरभी भक्तिरूपा रतिसु अन्यथाकर्तुं समर्थ होवेसु अपनी संतुष्टि प्रकट करे)

ठणठणतो वालो लाडक डो ते भोजनशाळायें आवे जी।।१३।।
राधा–अधर–सुधा बिना, पीयुने बीजु काईं नव भावे जी।।
प्रात: पधारे ने निशाये आवे वालो प्रीति नवी उपजावे जी।।१४।।
मातानूं मन रंजवा वालो आरोग्या बहू स्वादें जी।।
सुगंध बीडी कर धरीने उठ्या नूपुरने नादे जी ।।१५।।
सकल ब्रजमां पोढिया वालो विविध रससुखदान जी।।

(उपसंहारमें ऐसी स्वतन्त्रलीला हृदयमें निरुद्ध होवेकी प्रमाणपंथा स्थापकपुरुषके समक्ष याचना)
ए लीला म्हारे मन वसो ते भक्त मांगे मान जी।।१६।।
श्रीविट्ठल द्विजरूप तमारी, लीला एणी पेरे झाझी जी।।
ओळवे केम चालशे जे प्रीत अमशू बाझी जी।।१७।।

वल्लभाख्यान सातवों

(ज्योतिप्रकरण – ईशानुकथा)

(राग सामेरी)

(निर्गुणभक्तिके अनुभावरूप सेवाकथाकी श्रीमद्वल्लभ विट्ठलको वैभव)

आप सेवा करी शीखवे श्रीहरि।।
भक्तिपक्ष वैभव सुदृढ कीधो ।।
आपनी लीला ते वदन पोते कही।।
उच्चार आनंद ते अधिक दीधो ।।१।।
वेददधि मध्य नवनीत जे भजनरस।।
मथित माधुरी जीवे श्रवण पीधो ।।
तक्रसम कर्मपथ स्नेह–रस–हीन जे।।
श्वेत जाणी विमुख ताणी लीधो ।।२।।

(विषयासक्तिके कारण प्रपन्न न होवेवाले जीवन्की निन्दा)

ए चरणशरण विना लोक दशचारमां।।
कहोने कोनो कांई अर्थ सीधो ।।
शुं कहुं चतुर थई थई अने विस्तरे।।
भजे नहीं पशु जेम विषय कीधो ।।३।।

(''आचार्यं मां विजानीयाद्'' ये श्रुतिवचनसु पुष्ट्याचार्यको पुरुषोत्तमपनेा वेदादिशास्त्रकु प्रतिपाद्य लगतो होवेपर भी कण्ठतः अप्रतिपादन लोकवेदसु अतीत होवेके कारण)

बोल वल्लभसुवन विमल वाणी।।

जेनी गति ब्रह्मादि देवे न जाणी।
गूढ रस तत्त्व जे वेदनी वाणी
ते प्रकट कीधी भक्त हेत जाणी।।४।।
नंदनंदनरूपे रासलीला करी।।
पोते न उच्चरी छानी राखी।
दिवस एकादनी उत्तराकुंवर प्रति।।
व्यासनंदन विमल वदन भाखी।।५।।
ब्रह्मादि महामुनी अतिज्ञान पारंगत।।
ते मधुसिंधुनी कहिये माखी।।
न कोई हुवो न होय ए रूप सम।।
तेहना सकल निजनिगम साखी।।६।।

(आचार्यसु विमुखकी निन्दा और अभिमुखकी स्तुति)
ए प्रभु रसपुंज ते भूमिपर रुचि करी।।
भाग्यहीन जीव जेणे कणिका न चाखी।।
तेने देव ऊपर रह्या धिक्कार बोले।।
मंदमति कही अने निन्दा दाखी।।७।।
विवुध वांछे वास वसुमती ऊपरे
श्रीवल्लभकुंवरनी टहेल करवा।।

(श्रीविट्ठलेशप्रभुचरणमें स्थायिनिर्गुणभक्तिभावके
संचारिभावतया चन्द्रावलीजीके भावको उपपादन)
घोषथी वेगे पांऊ धारिया गिरि भणी
श्रीगिरिराजधरणनो ताप हरवा।।८।।

फूल फेंटे भर्यां वसन वाघा तणां।।
विविध भूषण ते अंग धरवा।
तुरंग चाल्यो वायु वेगे उतावळो।।
जाणे नौका चाली सिंधु तरवा ।।९।।

दिवस एकार्धनो विरह ते युगसमो।।
निरांजन मिषे रूप हृदय धरवा।।
जीवने एह कृत्य नित्यप्रति क्षणु-क्षणु।।
'श्रीविठ्ठलनाथ' एवा उच्चरवा।।१०।।

रूप बेउ एक ते भिन्न थई विस्तरे
विविध लीला करे भजनसार।।
विविध वचनावली नयन सेने करी
संज्ञा सूचवे निशि विहार।।११।।

रत्नमुक्तावली पाटसूत्रे करी।।
गलसरी शोभिता करे शृंगार।।
विविध कुसुमावली ग्रथित हाथे करी।।
एक-एकने कंठे आरोपे हार।।१२।।

विविध मेवा भोग मधुर मिष्ठान्न रस।।
रसमस्या अर्पे ते बहु प्रकार।।
विविध बीडां सुगंध कर्पूर एलची।।
लविंग-पूंगी अने खेरसार।।१३।।

व्यंजन शीतल वायु मुकुर कर-कमल धरि।।
देखाडतां मोहे सकल संसार।।

(या प्रकारसु भक्तिपरायण आचार्यमें उनके अनुगामिन्को भी ऐसे भक्तिभावके संचारको निरूपण)

एह सेवारस प्रकट पोते करी।।
निज सेवक तणी कीधी सार ।।१४।।

ए अहर्निश ध्यान श्रीवल्लभाधीशनुं।।
सकल कलि–मल–दुरित–कोटि क्षाले ।।
ए प्रभु भुवि प्रकट विप्र–वर–तनु धरी।।
दीठडे त्रिभुवन तणां चित्त चाले ।।१५।।

जालरंध्रे सखी जाणे चित्रे लखी।।
वांछिता नाथनी छबि निहाळे ।।
कमल खंजन मीन मधुप ज्यां त्यां थकी।।
वक्र लोचन प्रांत पाछा वाळे ।।१६।।

हावभावादिक कोटि–कोटि करे,
मदन–ज्वर–व्यथा ते वेग टाळे।।

(उपसंहारपद्यमें प्रभुचरणकी स्वमाहात्म्यकी सत्यापकत्वकी स्तुति)

दासनो दास भणे सकल सज्जन सुणे।।
श्रीविट्ठल आपनुं विरद पाळे ।।१७।।

वल्लभाख्यान आठवों

(ज्योतिप्रकरण – निरोधलीला)

(राग धन्याश्री)

(व्रजजीवनप्राणरूप धर्म प्रभुको और प्रभुचरणको उभय साधारण होवेसु दोनोंके व्रजवास साधननिरोधरूप)

ललित मनोहर श्रीवल्लभ–सुवन सुजाण ।
नखशिख सुन्दर व्रजजन–जीवन–प्राण ।।१।।

(स्वस्वरूपसु श्रीविट्ठलनाथजीके द्वारा प्रमाणादिको निरोध)

वदनकांति जाणे उदया कोटिक भाण ।
द्विजकुलमंडन प्रगट्या पुरुष प्रमाण ।।२।।(प्रमाणनिरोध)
नाम निरूपम उच्चरे सकलकल्याण ।
तेना साखी चारे वेद–पुराण ।।३।।(प्रमेयनिरोध)
असुर हणेवा ब्रह्मवाद करपाण ।
भक्ति करे सहु वाजंते रे निसाण।।४।।(साधननिरोध)
वैष्णवजनने आपे पदनिर्वाण ।(फलनिरोध)

(व्रजवाससु व्रजभावभावुक भक्तन्को साधननिरोधको प्रकार)

मारग मुक्तो कोई न मागे दाण ।।५।।
चरणचाखडी वंदे राणोराण ।
सरस थया जे हुता प्रेत पाषाण ।।६।।
हतित–पतितनुं जुवो तमे प्रकट एंधाण ।
शेष सहस्रमुख उच्चरे जेना वखाण ।।७।।
चौद लोकमां वरते जेनी आण ।
त्रास तिमिरनुं जाणे सकल विहाण ।।८।।

अधर्म सकलनुं पेरे पेरे कीधुं वित्राण।
धर्म सकलनुं प्रभुजीये कीधुं त्राण।।९।।
सन्मुख कीधां जे हुता भ्रष्ट अजाण।
निर्भय कीधां शिरपर धरी निजपाण।।१०।।
निगमतत्त्वरस यश भर्या अमृतसंधान।
रूपसुन्दरता शुं कहुं! नहीं को'ए समान ।।११।।
कृपा करी हरी राखी बहु विध का'न।
सेवक जनने राखी ल्यो एह ल्हाण।।१२।।

(नादसृष्टिके पुष्टिजीवन्कु श्रीविट्ठलनाथजीके स्वरूपसु भगवान् श्रीकृष्णमें फलात्मकनिरोधकी प्राप्ति)

एवा ते गुणनिधि नाथ गातां ब्रह्महत्यादिक अघ टळे।
लीला ते लहरी सिंधु झीले रासरसिकने जई मळे।।१३।।
नि:साधन-जन-हित करेवा श्रीनाथ विट्ठल आवीयां।
ब्रजमां ते हींडे मलपतां ते ब्रजसखी मन भावीयां।।१४।।
कमलनेणे ने अमृतवेणे वाक्यमाधुरी रेडतां।
वेदध्वनि मिषे हस्तचलणे शोभे सौने तेडतां।।१५।।
रंगे ते रमतां रसभर्यां प्रभु घोषमां लीला करे।
अधिक-अधिक प्रतापपूरण यश दशोदिश विस्तरे।।१६।।

(श्रीविट्ठलनाथजीके द्वारा प्रकाशित निजशक्तिरूपसप्तात्मजन्की फलनिरोधलीला)

भांति-भांति लीला करे प्रभु साते स्वरूप सोहामणां।
एक-एकथी अधिक शोभा ब्रजसखी ले भामणां।।१७।।
पेरे पेरे परिवार सोहे, देव मोहे निरखतां।

उत्साह आनन्द अधिक वाध्यो कुसुम वरखे हरखतां ।।१८।।

प्रति सदन शोभा अतिघणी भणी वेद वदने न जाय ।
मकरंद माता भ्रमर गुंजे पक्षिनाद सुहाय ।।१९।।

(श्रीविट्ठलनाथजीकी अन्त:पुरलीलामें भी फलरूपा श्रीनवनीतप्रियजीमें निरुद्धता)

अंत:पुरलीला करे प्रभु सकलजन संतोषतां ।
जाणे मत्त मातंग छूट्या नूपुरने निरघोषतां ।।२०।।

हार कंकण कर्णभूषण नाद नाना हींडतां ।
गान गाये ने सूर सुहाये 'श्रीनवनीतप्रियाजी'ने पोढतां।।२१।।

संध्या समें सिंगार नौतन फूल गूंथे सहु मळी ।
सदनशोभा निरखतां ते लक्ष्मी मन पाम्या रळी ।।२२।।

वास वांछे ब्रज बसेवा एणी पेरे सुख पामवां ।
श्रीपुरुषोत्तम उत्तम वरने समे जोई शिर नामवां ।।२३।।

(श्रीविट्ठलनाथजीके आवासमें स्थित प्रिय और आप्तजनन्को भी भगवत्सेवा–कथामें फलनिरोधको निरूपण)

लीलाने अनुसार कलरव कूजतां द्विज शोभतां ।
स्वस्वभाव–त्यागी ध्यानरागी कोईक भावे लोभतां ।।२४।।

सहचरीरत्न सुकंठ नादे गान सुयश प्रकार ।
रसिक जन सहु संग मळीने करे ते उच्चार ।।२५।।

एणी पेरे लीला करे श्रीवल्लभराजकुमार ।
भक्तजननां कोड पूरो आपो चरणविहार ।।२६।।

वल्लभाख्यान नोमों

(ज्योतिप्रकरण–मुक्तिलीला)

(राग विभास)

(भक्तिमार्गमें भगवदीय होनो मोक्षसुं श्रेष्ठ उपलब्धि हे वो वल्लभपरिवारमें कैसे निभी वाको विवरण)

नित प्रति क्षणु क्षणु समरियें,
श्रीवल्लभनो परिवार रे रसना।
श्रीपुरुषोत्तम प्रगटिया,
जगतनो करेवा उद्धार रे रसना।।१।।
कलिमां कारण एह छे,
बीजुं सर्वे भूमिनो भार रे रसना।
ए बिना बीजुं सर्वे बादलुं,
चौदलोकनो शणगार रे रसना।।२।।

(प्रमाणरूप श्रीगोपीनाथजी और प्रमेयरूप श्रीविट्ठलनाथजी की भगवदीयताको स्वरूप)

'श्रीगोपीनाथजी' सोहामणा,
नवजल घन तनु भाण रे रसना।
सुखदाता लघु भ्रातनां,
पूरण पुरुष प्रमाण रे रसना।।३।।
कमललोचन करुणा भर्यां।
'श्रीविट्ठल' सुखरास रे रसना।।
डीठडे ताप त्रिविध टळे,
स्मरण मात्र अघनाश रे रसना।।४।।

(प्रभुचरणके सप्त आत्मजन्‌की भगवदीयताको स्वरूप)

'श्रीगिरिधर' नर भूषण भ्रात,
सकल धुरिधार रे रसना।
वक्ता वेद शास्त्र तणां,
'श्रीभामिनीजी' भरतार रे रसना।।५।।
'श्रीगोविन्दजी' आनन्दमय,
धर्म सकलनुं धाम रे रसना।
'श्रीराणीजी' रंजन रूडला भक्त,
सकल विश्राम रे रसना।।६।।
'श्रीबालकृष्णजी' बालुवा,
सुंदर भीनले वान रे रसना।
कमल लोचन 'कमला'पति,
छबि नहीं को'ए समान रे रसना।।७।।
'श्रीगोकुलपति' अति गुणनिधि,
तात तणों प्रतिबिम्ब रे रसना।
'श्रीपारवती' पति प्रेमशुं,
शोभा सकल कुटुम्ब रे रसना।।८।।
'श्रीरघुपति' अति गजगति,
रतिपति करूं बलिहार रे रसना।
'श्रीजानकी' जीवन ए सदा,
मध्य मणी रत्नमय हार रे रसना।।९।।
'श्रीजदुपति' जीवन जगतना,
सदा मन प्रसन्न हुलास रे रसना।

नाह ते 'श्रीमहाराणी' तणां,
मुख माधुरी विलास रे रसना ।।१०।।
'श्रीघनश्यामजी' सींचे सुधा,
जीवन सकल ब्रह्मांड रे रसना ।
नाथ ते 'श्रीकृष्णावती' तणां,
लीला नित्य अखंड रे रसना ।।११।।

(श्रीगोपीनाथजीकी दोनों पुत्रीन्‌की भगवदीयताको स्वरूप)

'श्रीलक्ष्मी' 'सत्यभामा' ए बेहु,
अग्रजनी अनुहार रे रसना ।
श्रीनवनीतप्रियाजीने रीझव्या,
सेवा विविध प्रकार रे रसना ।।१२।।

(श्रीविट्‌ठलनाथजीकी चारों पुत्रीन्‌की भगवदीयताको स्वरूप)

'शोभा' 'यमुना' 'कमला' 'देवका',
जेने सात बांधव सोभाग रे रसना ।
एहुना चरणस्मरण करी, श्रीविट्‌ठल–
पद–रजरति मांग रे रसना ।।१३।।

(आख्यानोपसंहार)

पुत्र पौत्रादिक सुख शुं कहूं,
जो तू मुखमां एक रे रसना ।
'श्रीविट्‌ठल' कल्पद्रुम फळ्यो,
तेनी शाखा पसरी अनेक रे रसना ।।१४।।